# वेद–जिनसे पैदा हुये है संसार के सभी धर्म

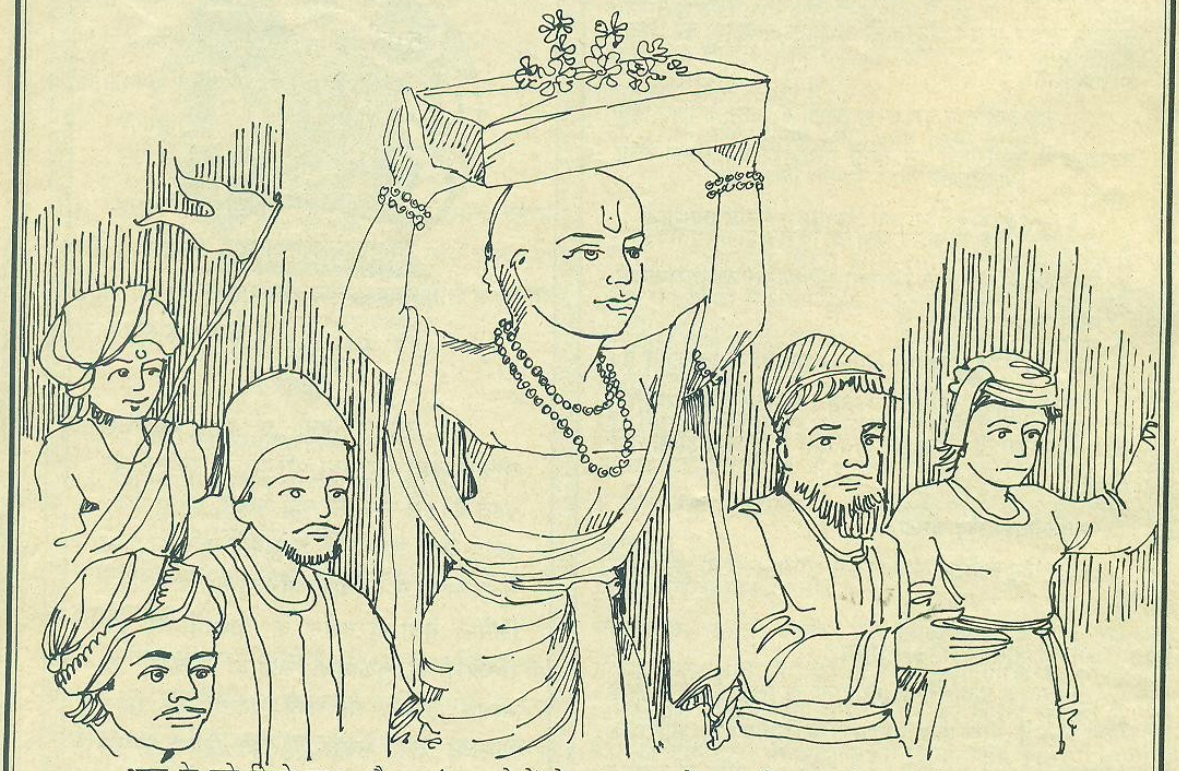

आज के पढ़े लिखे सभ्य और सुसंकृत लोगों से जिनकी आत्मा जग चुकी है, यह बात छिपी नहीं रह गयी है कि वेदों से ही संसार में सारे धर्म पैदा हुये हैं। वेद ज्ञान के भण्डार हैं जो ज्ञान हर धर्म का आधार बनता है। धर्म जीवात्मा और परमात्मा के सम्बन्धों का नाम है। हर धर्म इसी विश्वास पर आधारित हैं कि वह मनुष्य की आत्मा को विश्वात्मा में विलीन करने की शक्ति प्रदान करता है।

आज के संसार में केवल दस धर्म हैं जो सारे संसार मे माने जाते हैं और वे सब के सब एशिया में जन्मे थे। हिन्दू धर्म इन सबमें पुराना है जो वेदों पर आधारित है। बौंध, जैन और सिख्ख धर्म भारत में जन्में। कन्फ्यूशियन धर्म और ताओ धर्म चीन के हैं, पारसी धर्म ईरान में जन्मा। यहूदी और ईसाई–धर्म फिलिस्तीन में पैदा हुये तथा इस्लाम को अरब में जन्म लेने का गौरव प्राप्त है। सम्पूर्ण यूरोप जिन धर्मों को छाती से लगाकर अपनी शांति कर रहा है वे सारे एशिया के है।

**॥ वेद सबका आधार है ॥**

वेद शब्द विद् धातू से बना है जिसका अर्थ है ज्ञान, सांसारिक –ज्ञान नहीं–आध्यात्मिक ज्ञान, जो जड़ और चेतन को एक बनाने के लिये सदैव गतिशील रहता है। ज्ञान कि भी गती है– जिसके बारेंमें कहा गया हैं कि ''सदा एक रहते हैं फिर भी सदा परिवर्तनशील हैं''। वेद भारतीयता की सम्पूर्ण सांस्कृतिक–सम्पदा के मूलाधार हैं। यही सम्पूर्ण वैदिक–सम्पत्ति है। वेद का उच्चस्तरीय ज्ञान ही वह अपरोक्षानुभवातीत–दर्शन है। जिससे मानवात्मा प्रकृति की शक्तियों से अपना तादात्म्य स्थापित करके ब्रह्म के पाने का प्रयत्न करता है। वेद दर्शन के स्तम्भ हैं। प्राचीन ऋषि–मुनियों ने वेदों के मंत्रो के माध्यम से ही अपनी आत्मा का दर्शन किया था।

वेद न मत है न सिध्दांत है। वेद आध्यात्मिक–चेतना के वह चित्रफलक हैं जिनमें मनुष्यात्मा को विश्वात्मा के विश्वातीत दर्शन होते हैं। वैदिक ब्रम्ह की उन शक्तियों के अनुभव हैं जो यह सृष्टि बनाते हैं और बिगाडते रहते हैं। वेद पारलौकिक ज्ञान के प्रतीक हैं। वे ईश्वरानुभव कराने के प्रयत्न

हैं। प्रकृति के तत्व होने के कारण वे न अचूक न सर्वज्ञ वरन उनके सोपान हैं।

वेदों से जो तत्व चरित्र बनकर बाहर निकलता है संकल्प बनकर जो शक्ति बनता है वही धर्म है। धर्म ईश्वर और मनुष्य के बीच की डोरी के दो बिन्दु हैं। साधना इस डोरी की लम्बाई कम करती रहती है।

**॥ हिन्दू धर्म ॥**

हिन्दूधर्म वेद पर आधारित है। हिन्दूधर्म का मूल है।

**एष देवो विश्वकर्मा महात्मा सदा जनानां हृदये सन्निविष्टः।**
**हृदा मनीषा मनसाभि क्लृप्तो य एतद्विदुरमृतास्ते भवन्ति ॥**
**श्वेताश्वतर ४/२६**

**॥ जैनधर्म ॥**

जैन धर्म कहता है कि तीर्थकर बनो जो संसार–सागर को पार कराने के लिये एक नौका देता है– यही नौका धर्म है। तीर्थकर अर्हत यानी पूजा के लिये है। यह संसार के धर्म को जीवन देता है।

**॥ बौध्दधर्म ॥**

बौध्दधर्म हिन्दू धर्म का सुधारात्मक रूप है। बुध्द का अर्थ जागना। बुध्द ने श्रुति के केवल उसी भाग की निंदा की थी जिसमें पशुबलि का विधान था।

**॥ सिक्ख धर्म ॥**

जब हिन्दुत्व कमजोर पड़ गया तब हिन्दू धर्म के शरीर से बीर–भुजा के रूप मे जो सुरक्षात्मक–कवच निकला, उसे ही मैं सिक्ख धर्म कहता हूँ।

**॥ कन्फ्यूशियन धर्म ॥**

कन्फ्यूशियस वेदों के भाष्य (दार्शनिक ग्रन्थ) उपनिषदों से प्रभावित था इसलिये सम्पूर्ण कन्फ्यूशियन धर्म वेदों पर ही आधारित हैं।

**॥ ताओ धर्म ॥**

ताओ धर्म बौध्द धर्म की आध्यात्मिकता पर आधारित है। जीवन को शुध्द रखकर आध्यात्मिक – सिध्दि पाना ही ताओ धर्म का मूल – मंत्र है।

**॥ पारसी धर्म ॥**

पारसी धर्म ईरान में जन्मा था। इसमें व्दैतवाद है यानी दो शक्तियों का खुला संघर्ष है ये शक्तियाँ जहुरमज्द तथा अन्ग्रमैन्यु हैं और इनका संघर्ष ही सारा दृष्य संसार है। इसका प्रथम पुण्य और व्दितीय पाप का प्रतीक है।

यह धर्म सर्वजनित है। अवेस्ता कहता है–

हम आर्य, तूरानी, सारनेशियन, सीरियन, डेशियन सभी देशों में धर्मनिष्ठ स्त्री–पुरूषों की आत्माओं का आदर करते हैं।

**॥ यहूदी धर्म ॥**

यहूदी धर्म में यहूदियों की बाइबिल यहूदियों से शुरू हाती है। आदम की कहानी इसकी शुरूवात है। हिब्र का अर्थ है आदमी – यानी आदमी की कहानी। आदमी की शक्ल ईश्वर की शक्ल पर है।

**इसमें मूर्तिपूजा नही है**
**प्रेम इस धर्म की नींव है।**

**॥ ईसाई धर्म ॥**

ईसा का धर्म ही ईसाई धर्म है। यह बौध्द धर्म का ही एक संस्करण है। जब बुध्द कहते हैं कि चुंद लुहार के खाने से मैं मरा हूँ तब ईसा कहते हैं कि जो तुम्हारे गाल पर एक चाँटा मारे, तुम उसके आगे दूसरा गाल कर दो।

**॥ इस्लाम धर्म ॥**

इस्लाम धर्म तो सीधे तौर पर वैदिक–सत्ता का ही अरबी रुपान्तरण है। मंदिर का मस्जिदी–रुप है। निरंकार ब्रह्म ही खुदा है। जिसकी इबादत करनी चाहिये।

इस्लाम भौतिकता की निंदा करता है। कुरान में कहा गया है कि अल्लाह जिसको चाहता है उसको पथभ्रष्ट कर देता है और जिसे चाहता है, उसे सही रास्ते पर ले आता है।

**॥ सबधर्मोका सार ॥**

**मानवता सब धर्मो का सार है**
**सच्चा प्रेम ही मनुष्यत्व है।**

धर्म, रुद्राक्ष, तुलसी, त्रिपुण्ड, यात्रा, स्नान होम, जप या देव–दर्शन में नहीं–सेवा में है। सत्य और अहिंसा से ही शांति का मार्ग प्रशस्त होता है।

**रुद्राक्षं तुलसीकाष्ठं त्रिपुण्ड्रं भस्म धारणम् ।**
**यात्रास्नानानि होमाश्च जपा वा देवदर्शनम् ॥**
**न एते पुनन्ति मनुजं यथा भूतहिते रतिः ।**
**एतद्देश प्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः ।**

**स्व स्वं चरितं शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः ।**

मनुष्य अपने विकास को उत्तरोत्तर इतना बढा लेता है जितने की चर्चा मत्रिझम निकाय २२, उपनिषद की इस उक्ति में है–

**शास्त्राण्यभ्यस्य मेधावी ज्ञानविज्ञान तत्पर :।**
**पलालमिव धान्यार्थी त्यजेद ग्रन्थान शेषतः ।**

अर्थात–बुध्दिमान पुरुष ज्ञान विज्ञान की इच्छा से शास्त्र पढ़ता है, लेकिन जब उसका उद्देश्य पूरा हो जाता है तब वह ग्रन्थों को इस प्रकार छोड़ देता है। जैसे धान्यार्थी धान्य प्राप्त करके भूसे को छोड़ देता है।

**॥ निष्कर्ष ॥**

हर धर्म अपने पूर्ववती–धर्म का उन्नत रुप होता है पर इन धर्मो के दर्शन से पता चलता है कि संसार का हर धर्म जहाँ से शुरु हुआ था वहीं पर आकर खत्म हो गया है और वह जगह है वेद की। वेद ही हर धर्म की रीढ़ है।

**॥ धर्मो का मल ॥**

धर्मान्धता, कट्टरता, असंहिष्णुता और जबरदस्ती दूसरों पर अपने धर्म को लादना धर्म का मल है। संसार आज इसी मल से परेशान है । वेद इसे दूर कर सकते हैं। वेद ईश्वरीय उच्छवास है, आज जिनकी सबको जरुरत है।

**॥ धर्म के द्वार ॥**

धर्म के अनेक द्वार होते हैं और व्यक्ति जिस राह पर चाहे उसी राह पर चले, यही धार्मिक आत्मस्वातंत्र्य है। यही सच्चा धर्म–मार्ग है जिसे वेदों ने कहा और महाभारत ने इस प्रकार छंदित किया– **बहुद्वारस्य धर्मस्य नेहास्ति विफला क्रिया।**

महाभारत, शांति पर्व १७४.२

वेद धर्म पर अपना शासन कायम न करके यही कहते हैं कि सत्ता ब्रहम् के रहस्य को जानने के और तरीके भी हैं। यही भारतीय–तत्वविद्या वेद की उदार–भावना का उदघोष है। ब्रहम् धर्म के द्वार ही जाना जायेगा पर किस धर्म के द्वारा जाना जायेगा। यह बात तो सार्थक ही जाने। यही सर्वधर्म सम भाव है अर्थात **समवाय एव साधु ।**

**श्री. रसिक बिहारी मंजुल**
दिल्ली